आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ

दस दिवसीय प्राकृत कार्यशाला

दिनांक- 10-22 मार्च 2025

दिनांक 10-22 मार्च 2025 को दस दिवसीय प्राकृत कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया | कार्यशाला का उद्देश्य वर्त्तमान में प्राकृत व्याकरण एवं साहित्य का ज्ञानार्जन कराना था | कार्यक्रम में मंगलाचरण प्राध्यापक राहुल जैन ने किया | विषय विशेषज्ञ में डॉ. समणी संगीत प्रज्ञ, लाडनूं, डॉ. आशीष जैन, डॉ. कोमलचंद्र जैन, कानपुर, डॉ. समता जैन, इंदौर, सागर ने प्राकृत वर्णमाला परिचय, घोष-अघोष, अल्पप्राण, स्वर, व्यंजन परिवर्तन, संज्ञा सर्वनाम कारक विभक्ति आदि विषयों पर वक्तव्य दिया |

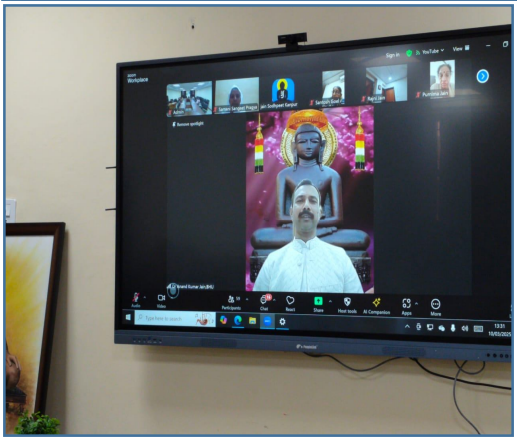

संस्कृत-प्राकृत भाषा भारतीय संस्कृति का गौरव

कानपुर। सीएसजेएमयू के स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ की ओर से एकदिवसीय भारत और विश्व के लिए प्राकृत भाषा का महत्व विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. आशीष जैन ने कहा की संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव है। द्वितीय वक्ता राजस्थान के डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि भारतीय संस्कृति प्राचीन है। जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी एवं संस्थापक प्रदीप जी तिजारा वाले और अरविंद कुमार ने प्राकृत भाषा के इतिहास के बारे में जानकारी दी।

प्राकृत भाषा को दी गई क्लासिकल की मान्यता

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- जैन शोधपीठ ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का किया आभार व्यक्त
- गोष्ठी में ऑनलाइन तरीके से जुड़े कई प्रांतों से विद्यार्थी और शिक्षक

अमृत विचार। सीएसजेएमयू के स्कूल आफ लैंग्वेजेज में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन पीठ ने भारत और विश्व के लिए प्राकृत भाषा का महत्व विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया। जैन शोधपीठ ने प्राकृत भाषा को क्लासिकल भाषा की मान्यता दिए जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताया। कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयास से प्राचीनतम प्राकृत भाषा को नया आयाम मिलेगा।

मुख्य वक्ता डॉ.आशीष जैन ने कहा कि संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं भारतीय संस्कृति का गौरव हैं। प्राकृत साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अभूतपूर्व चित्रण भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा किया गया है। राजस्थान के विश्व भारती विश्वविद्यालय की डॉ.समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि प्राकृत साहित्य में दया, करुणा व अहिंसा जीवत्य सिद्धि की बात की गई है। मुख्य अतिथि जैन शोधपीठ के प्रमुख ट्रस्टी व संस्थापक प्रदीप जी तिजारा व अरविंद कुमार जीसीए ने प्राकृत भाषा के इतिहास बताया। कहा कि भगवान महावीर ने प्राकृत भाषा में अपने उपदेश दिये। जैन समाज लंबे समय से प्राकृत भाषा के जिस उच्च सम्मान के लिए प्रयासरत था, उसे आखिरकार प्रधानमंत्री के नेतृत्व में प्राप्त किया। अध्यक्षीय वक्तव्य निदेशक डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी ने दिया। गोष्ठी संयोजक डॉ.अंकित त्रिपाठी थे।

डॉ.प्रभात गौरव मिश्र ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के महत्व के चिंतन पर जोर दिया। गोष्ठी में ऑनलाइन माध्यम से देश के विभिन्न प्रांतों से विद्यार्थियों व शिक्षकों ने जुड़कर प्रधानमंत्री व कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार पाठक का आभार व्यक्त किया। इस दौरान सहायक आचार्य राहुल जैन, शोधपीठ के सचिव सुमित जैन, डॉ. कोमल जैन, डॉ. सुमना विश्वास, डॉ.पूजा अग्रवाल, डॉ. रिचा शुक्ला, डॉ.विकास कुमार यादव, शालिनी शुक्ला, डॉ. प्रीतिवर्धन दुबे समेत आदि शिक्षक व विद्यार्थी रहे।